



अध्याय – 11

सङ्गीत आ समाज

उद्देश्य: गीतक बोलमे रूढ़ि वादकें सुनब आ विकल्प बनेबाक प्रयास।

सङ्गीतक उपयोग सामाजिक सन्देशक लेल कयल जा सकैत अछि। स्वतन्त्रता सङ्ग्रामक अवधिमे हमर नेता लोकसभकें अङ्ग्रेजक विरुद्ध एकजुट करबाक लेल सङ्गीतक उपयोग कएलनि।

गतिविधि- 1: सङ्गीत जे एकता आनैत अछि !

हमर राष्ट्रगान भारतक विविधताक प्रतिबिम्ब अछि !

नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर पहिल भारतीय आ गैर-यूरोपीय छलाह जे रूढ़िवादकें तोड़ि 1913 मे साहित्यमे नोबेल पुरस्कार जीतलनि। राष्ट्रगानक रचना संस्कृत बांग्लामे कयल गेल छल। ई भारतक विशाल आ विविध भौगोलिक परिदृश्यकें उजागर करैत अछि।

- गीतक बोल आ अर्थकें बुझू आ एहि बातपर विचार करू जे ई भारतक विविधताक उत्सव



0680CH11

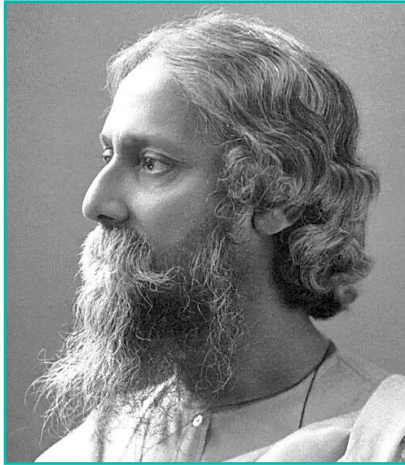
कोना मनबैत अछि।

- विश्लेषण करू जे रचना कोना गीतकें राजसी अनुभव करबैत अछि।
- ओहि भावनाक चर्चा करू जे गीत अपन शब्द आ सङ्गीत दुनूक माध्यमसँ उत्पन्न करैत अछि।

गतिविधि- 2: हमरा सबहक जरि

आहाँ प्राचीन ग्रन्थ, वेद आ उपनिषदक विषयमे जरूर सुनने होयब। ओ सभ हमरासभकें दयालु, सत्यवादी आ प्रेमपूर्ण बनबाक लेल प्रेरित करैत अछि, तखनो जखन हम एक दोसरसँ भिन्न छी।

कठोपनिषदक एहि प्रेरणादायक छन्दकें देखू आ गयब सीखू, जे स्वामी विवेकानन्दक प्रिय छन्द सेहो छल।



विस्तारित क्रियाकलाप

ई गीत कोन स्टीरियोटाइपकें मजगूत करैत अछि ?

गुड़िया रानी, बिटिया रानी परियों के शहर सँ एक दिन

राजकुंवर #नाम आबि जाएत ? आ ओकरा महलमे लऽ जायत

अनुवाद: हमर राजकुमारी गुड़िया, एक दिन आहाँक राजकुमार आकर्षक आबि जायत आ ओ आहाँकें अपन महल लऽ जायत ।

नन्दलला यशोमती मैया सँ बाजल

राधा किएक उज्जर छथि, हम कारी किएक छी ?

अनुवाद: नन्दला यशोधासँ पुछलखिन, हम अन्हार किएक छी आ राधा किएक गोरी छथि ?

की आहाँकें अपन मूल भाषाक कोनो एहन गीत याद आबि सकैत अछि जे रूढ़िवादकें मजगूत करैत अछि ? मूल गीत लिखू आ साझा करू जे आहाँ ओकरा कोना बदलब ।

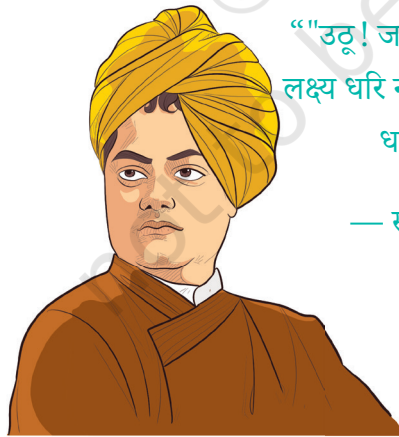
जागब, जागब, जागब, जागब, बिआह करब,
निबधाता, खुरासाय धरा निशिता
दुरत्यया, दुर्गम पाठस्तत कवयो वदन्ती

सुनू आओर जवाब दिअ'

आब ई गीत सुनि लिय । ई कोन भावना उत्पन्न करैत अछि ?

गतिविधि- 3: परिवर्तन बनू

ई गीत सुनू आ सीखू आ सोचू जे आहाँ कोना सुपर हीरो बनि सकैत छी आ सकारात्मक परिवर्तन आनि सकैत छी ।



“उठू ! जागू ! आ जाबति धरि
लक्ष्य धरि नहि पहुँचि जाइ ताबत
धरि नहि रुकू ।

— स्वामी विवेकानन्द

गतिविधि- 4: रूढ़िवादी

सङ्गीतक उपयोग रूढ़िवादी बनयबाक लेल सेहो कयल जा सकैत अछि । रूढ़िवादी धारणा संस्कृति, जाति, रंग, लिंग अन्य कारक के आधार पर पूर्वकल्पित विचार अथवा सामान्यीकरण के संदर्भित करैत छैक । मुदा आहाँ एकरा बदलि सकैत छी !

निम्नलिखित गीत सुनू आ जँ आहाँ भाषासँ परिचित नहि छी तँ

अनुवाद पढ़ू:

बबुआ की मुरगी

की बबुआ मुर्गी नहि कहैत छथि ?

बबुआ का मुर्गा कुकाडू कू बबुआ की मुरगी रूठ गई ना मानू माइ ना मानू बबुआ का मुरगा क्यू अकादे ? ओकर सर पर कलगी हे

जकर माथ पर कोनो मुकुट नहि अछि ओ गरीब मुर्गी अछि

अनुवाद बबुआ के मुर्गी चुप रहैत अछि,

जखनकि बबुआक मुर्गा मुर्गा-ए-डूडल-डू जाइत अछि !

बबुआक मुर्गी परेशान अछि, कहैत अछि, "हम सहमत नहि होब !"

बबुआक मुर्गा किएक घूमैत अछि ?

किएकी ओ एकटा फैन्सी प्लम पहिरैत छथि, गरीब मुर्गीक विपरीत, बिना कोनो मुकुट के !

उपरोक्त गीतकेँ बदलबाक एकटा तरीका अछि:

बबुआ मुर्गी काहे खुश अछि, काहे खुश अछि? किएकि अंडा दैत अछि, इ दैत अछि !

अनुवाद: बबुआक मुर्गी किएक खुश अछि? किएकि ओ अंडा दैत अछि !

सङ्गीत लोकसभकेँ एक सङ्ग आनबामे सहायता करैत अछि मुदा ई रुढ़िवादी सेहो उत्पन्न कऽ सकैत अछि । कोनो एहन गीत ताकू जे आहाँ के उत्थान करय । अपन मित्र के सीखू आ सिखाउ । एहन गीतक सङ्ग एकटा किताब बनाबय पर विचार करू जे आहाँकेँ प्रेरित करैत हो ।

